


---

sUryaprAtaHsmaraNam

——  
सूर्यप्रातःस्मरणम्

——  
Document Information



---

Text title : sUryaprAtaHsmaraNastotram

File name : sUryaprAtaHsmaraNastotram.itx

Category : suprabhAta, navagraha

Location : doc\_z\_misc\_navagraha

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Latest update : April 2, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023



*sanskritdocuments.org*

---



---

sUryaprAtaHsmaraNam

——  
सूर्यप्रातःस्मरणम्  
——

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं  
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूषि ।  
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं  
ब्रह्माहारात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ १ ॥  
प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभि-  
ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च ।  
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं  
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥  
प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं  
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च ।  
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं  
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥  
श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः ।  
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

Encoded and proofread by

---

sUryaprAtaHsmaraNam

pdf was typeset on December 22, 2023

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)